निजीरेखा

मन के अनदेखे मोड़ों की कहानी

रेखा

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS

India | U.K.

Copyright © Rekha 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-029-3

Cover design: Daksh

Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: January 2026

प्रस्तावना

कविता मनुष्य की अंतःयात्रा का वह मधुर संवाद है, जहाँ शब्द केवल शब्द नहीं रहते—वे भावनाओं का रूप लेकर जीवन की धड़कनों से जुड़ जाते हैं। इस काव्य–संग्रह को लिखते समय मेरा उद्देश्य केवल अनुभूतियों को पंक्तियों में पिरोना नहीं था, बल्कि उन क्षणों को सहेजना भी था, जो अक्सर जीवन की भीड़-भाड़ में अनदेखे रह जाते हैं।

इन कविताओं में कहीं स्मृतियों की धूप है, कहीं संवेदनाओं की छाया; कहीं आत्मसंवाद की निःशब्द तरंगें हैं, तो कहीं संबंधों की अनकही प्रतिध्वनियाँ। हर रचना मेरे मन की उस यात्रा का पड़ाव है, जिसमें अनुभवों ने दिशा दी और भावनाओं ने भाषा।

मैं यह संग्रह पाठकों के हाथों में इस आशा के साथ सौंप रही हूँ कि इसकी कविताएँ उनके मन में अपनी जगह बना सकें। यदि ये शब्द किसी भी पाठक को उसके स्वयं के अनुभवों से जोड़ सकें, या एक क्षण के लिए ही सही, उसकी आत्मा को स्पर्श कर सकें—तो यही इस कृति की सबसे बड़ी सफलता होगी।

आभार

इस काव्य–संग्रह के सृजन में अनेक लोगों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग रहा है।

मैं अपने हमसफ़र की ताउम्र शुक्रगुजार रहूंगी जिन्होंने मुझे इस काव्य संस्करण को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया|

मैं अपने परिवार का विशेष रूप से धन्यवाद करती हूँ, जिनकी समझ, धैर्य और समर्थन ने मेरी लेखन–यात्रा को सहज और आनंददायी बनाया। अपने शिक्षकों और मित्रों की भी मैं ऋणी हूँ, जिन्होंने मुझे शब्दों की शक्ति और अभिव्यक्ति की सुंदरता का महत्व समझाया।

साथ ही, मैं उन सभी अनुभवों, स्मृतियों और संवेदनाओं की आभारी हूँ, जिन्होंने इस संग्रह की प्रत्येक पंक्ति को जीवन दिया। यदि इस पुस्तक की कोई भी कविता पाठकों के मन में थोड़ी-सी भी अनुभूति जगा सके, तो मैं अपने प्रयास को सार्थक मानूँगी।

अनुक्रमणिका

नमन... 1
निरंतर... 3
जागरण.. 5
गुमशुदा ख्वाब का सफर 9
नमी में मुस्कान 11
आँचल और ऊँगली के बीच 13
प्रेरणा का नाद...15
निराश मानव...17
किरण की पुकार 21
पालक...25
हुँकार 27
वक्त 29
जंजीरें...33
छाया एक वक्त की 34
अनकही...36
मंथन 38
नेत्रों से परे...39
ख्याली चलन..41
एक दाना...43
अन्जानी परछाइयाँ 47
बूंदों की दस्तक...49
जागती किताबें, सोती आँखें 53
पहचान की तलाश 55

नमन

इन वीरानियों में उजली किरण
इस उजली किरण में खिलता चमन
इस खिलते चमन में उगता सवेरा
इस उगते सवेरे को नमन

इस श्रद्धा में एक हँसता उपवन
इस हँसते उपवन में फलते फूलहन
इस फलते फूलहन में उठती सुगंध
इस उठती सुगंध को नमन

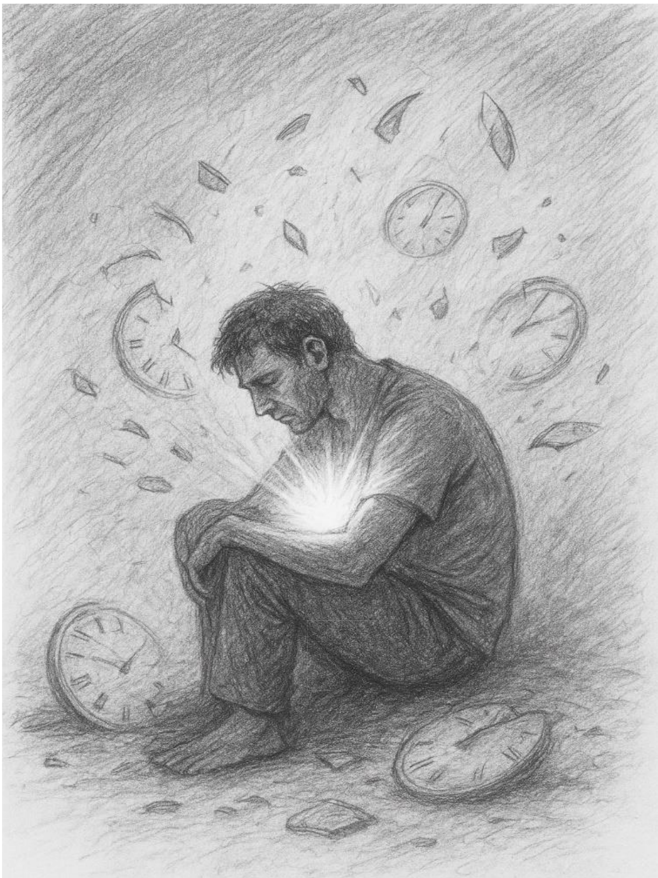

निरंतर

समय मत माँग किसी से
समय है तेरे पास खुदी से

सदिया बीत जायेंगी खोजते खोजते
खजाना है तेरे पास खुद ही से

रुकना नहीं खामियों के डर से
जुनून है तेरे पास खुद ही से

थकना नहीं नाकामियों के ढेर से
मकसद है तेरे पास खुदी से

डरना नहीं बदनामियों के कहर से
प्रसिद्धि है तेरे पास खुद ही से

रुँधना नहीं बिलकुल नहीं
उन माता पिता के डर से
कर्मठता है तेरे पास खुद ही से

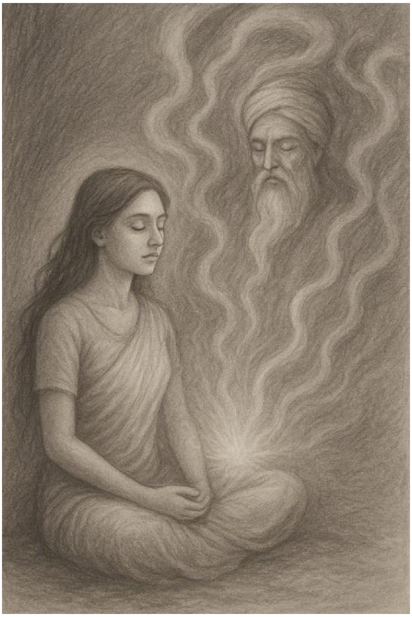

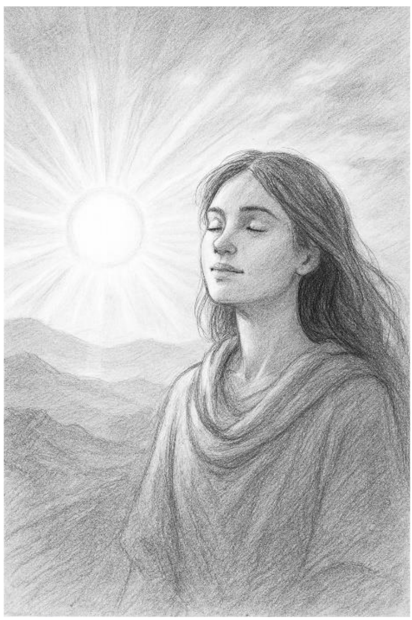

जागरण

सोच रही हूं मैं
मुझे आवाज आई है
लगता है किसी फकीर ने
यहां कुटिया लगाई है
आंचल रखा बाजुओं पर
चेहरे पर मुस्कान आई है
लगता है आज फकीर ने
भांग चढ़ाई है
केश सवार रही हूं मैं
खुद को निहार रही हूं मैं
लगता है आज फकीर ने
जटा चढ़ाई है
सज रही हूं आज मैं
शर्म हया भी आई है
लगता है आज फकीर ने
निंदिया जगाई है
ख्याल में हूँ मै,
अचानक आँख भर आई है
लगता है आज फ़कीर ने

अगन जलाई है
ढूँढ रही हूँ उसे मैं केवल
धुंए के सहारे
भटक गई मैं
भटकते हुऐ एक साये के सहारे
अचानक .....लगा की
आज फ़कीर ने हमें आवाज लगाई है

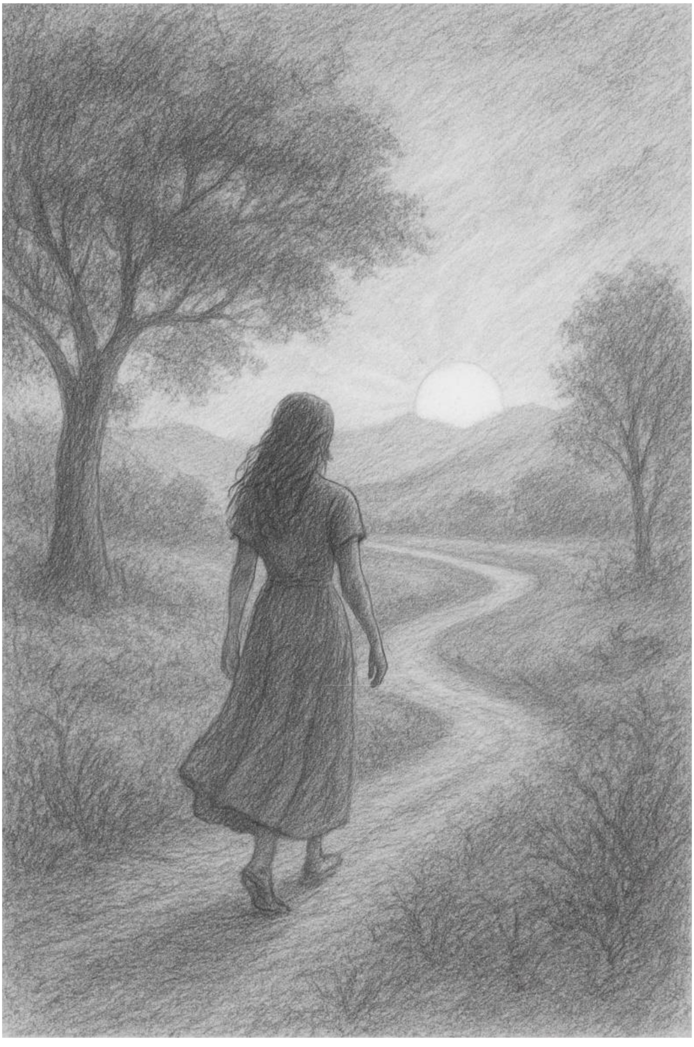

गुमशुदा ख्वाब का सफर

चल रहे हैं पेड़ सारे साथ हमारे
हंस रहा है सूरज आज साथ हमारे
आ रही है रौनक आज चेहरे पर हमारे
जैसे जा रहे हैं हम आज पास तुम्हारे
बस सुन रहे हैं आज खनक हमारी
दबा दिए हैं आज ख्वाब सारे
बस आ रहे हैं आज पास तुम्हारे
मुड़ रही है नदियां आज साथ हमारे
जो गुमशुदा सा ख्वाब था,
वह है आज पास हमारे
जो अनजाना सा रास्ता था,
वो चल रहा है आज साथ हमारे
बस आ रहे हैं आज पास तुम्हारे

नमी में मुस्कान

भीनी सी महक लगने लगी है
हल्की सी पवन भी थमने लगी है
गहरा गया है मौसम हर जगह
इस तरह
बस अभी झमाझम बारिश होने लगी है
बस अभी हलचल होने लगी है
ये सोचकर इस मौसम के बदलाव से
कि एक गुनगुनी सी सिहरन होने लगी है
बदल गई है बातें वही अब
मुस्कुराहटें भी आने लगी है
बदल गया है आँचल अब
आदतें भी बदलने लगी हैं
रुकी सी जिंदगी अब
चहकते हुए बहने लगी है

आँचल और ऊँगली के बीच

नजरें झुकाकर या नजरें चुराकर
समझ नहीं आता
ऊँगली पकड़कर या हाथ मिलाकर
समझ नहीं आता
सिर उठाकर या शीश झुकाकर
समझ नहीं आता
माँ का आँचल थांमू या
पिता की ऊँगली
समझ नहीं आता
चाँहू मैं उनको इतना,
कैसे कहुँ
समझ नहीं आता
शर्म हया से आँखे झुकाऊ या फक्र से
आँखे मिलाऊ
समझ नहीं आता
ये समझना मुझे है
क्यों तुमको समझाऊँ
समझ नहीं आता

प्रेरणा का नाद

उठ जमीं से, भीड़ गगन से,
उड़ान तू ऐसी भर
बैठ अमन से, उठ धमन से,
काम कुछ ऐसा कर
झुक तू नयन से, उठ तू नमन से,
नाम तू ऐसा कर
ध्यान धरे मग्न से, अमल करें लगन से,
युक्ति तू ऐसी कर
गीत बने कलरव से, सुर बने पवन से,
ध्यान तू ऐसा धर
ख़ुशी बने चिराग से, आस बने आग से,
समा तू ऐसा भर
आँसू हो ख़ुशी के, प्यार करे सभी से,
बयाँ कुछ ऐसा कर

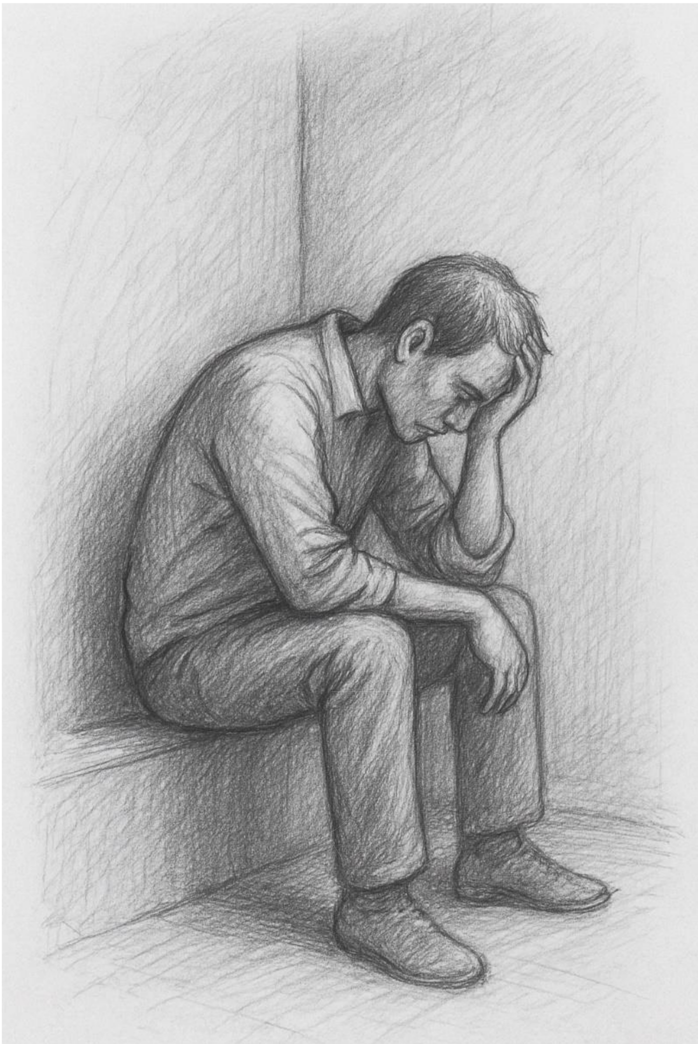

निराश मानव

हे निराश मानव ! तू यहां खड़ा है
किस बात को सोच कर सड़ा जा रहा है
इस दुनिया से कट कर
तू एक कोने में पड़ा है
क्या सोचकर…
तू यहां पर खड़ा है
यह दुनिया तेरे जैसी है
कहीं निराश, कहीं है आशा,
कहीं तो मँझधार है |
आशा से दुनिया चलती नहीं,
निराशा भी तो सही है |
आज परिणाम आएगा
क्या तेरे मन में वही है ?
हे निराश मानव !
इसी के लिए तू यही है |
हर जगह हरियाली है,
बड़े आनंदित है, बच्चे खुश है |
सभी हरियाली को देखकर दुख को काट रहे हैं
क्या तुम खड़े हुए, दुखों को दीवारों से बांट रहे हो ?

हे निराशा मानव !

हम यह ही नहीं कहते तू ही सही है

क्योंकि

आशा ही निराशा का कारण है

कहीं तिमिर है, तो कहीं तरुण है

हर जगह आशा नहीं होती

निराशा भी काम आती है |

आस को निराशा नहीं, निराश को आस नहीं,

परिणाम आने पर,

निराश को आशा हुई और आशा को खुशी

हे निराशा मानव ! उठ

निराशा को बदल, जीवन भी बदल

तू जहां मँझधार में खड़ा है,

वह भी नहीं है सही

उस किरण को साथ में रख,

जो चलती रहे तेरे गुण परख

हर जगह उदासी छाई हुई है

हर जगह श्रमता पसराई हुई है

कहीं मुस्कान भरी किरण, तू साथ लेकर चल

हे निराशा मानव !अब तू बन सकल |

हर जगह आस के संग रह नहीं सकता है तू

हर जगह निराशा को सह नहीं सकता है तू
निराशा और आशा विपरीत है
दोनों के बिना जीवन अवतरित है
हे निराशा मानव! संग में रख बन तू डगर
आशा और निराशा के मध् सेतु बन तू चल
हर सीख को लेता तू चल, बन सकल
हे निराश मानव ! सेतु बनकर तू चल

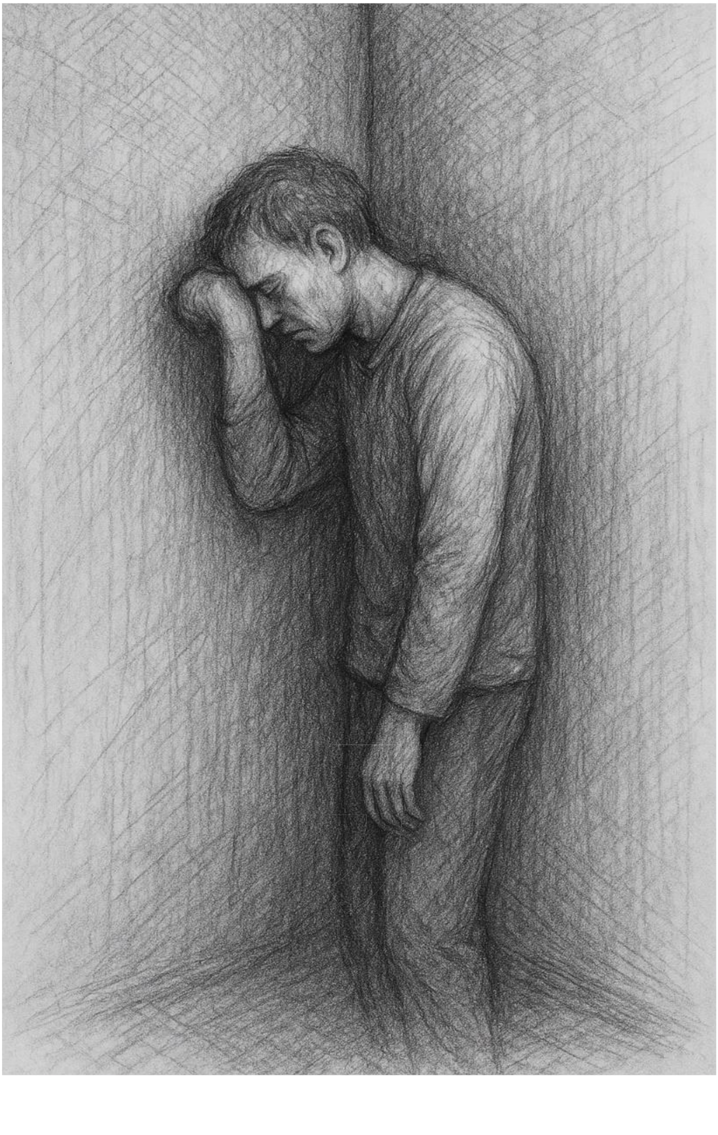

किरण की पुकार

हे मानव ! मुझे सुनो
मैं तुम्हें पुकार रही हूँ |
मैं तुम्हारे संग हूँ,
इस जीवन के पथ पर
फिर भी लथपथ हूँ, तेरे संग चलकर |
अरे मानव! कहाँ जा रहे हो मुझे छोड़कर
देखो मैं यहाँ हूँ तुम्हारे साथ
रहूँगी भी तुम्हारे साथ |
मैं ही हूँ जो तुम्हे शरद में भी बचाती हूँ |
वह श्रमिक देखो
तपता है मुझमें, करता है श्रम
थक जाने पर करता है विश्राम
फिर वही उमंग लेकर उठ जाता है
करने को काम |
हे मानव ! मैं तुम्हारे साथ हूँ
तुम्हें श्रम करने की शक्ति प्रदान करती हूँ
मैं भी तुम्हारे साथ परखती हुई जाती हूँ
यदि तुम मुझे संग नहीं रखते हो
और बचने की कोशिश करते हो

तब भी मैं चलती रहती हूँ
तुम्हारे नहीं तो किसी और के संग
उसे भी प्रेरणा देती हूँ।
उस चरगाहे को देखो
दिनभर चलता है चरगाह को लेकर
मैं उसके भी संग हूँ
मुझसे बचने की कोशिश करता है, तरुओं की छाँव में
फिर भी मैं उसके संग हूँ, किसी न किसी दाँव में
हे मानव ! मुझे अपने संग लो।
मेरी पुकार सुनो
इस श्रमित जग में, मैं तुम्हारे साथ हूँ
मैं ही झरने को बहने की प्रेरणा देती हूँ
हर पथ में मैं ही उसे रास्ता दिखलाती हूँ
हे श्रमित मानव ! मुझे संग लो।

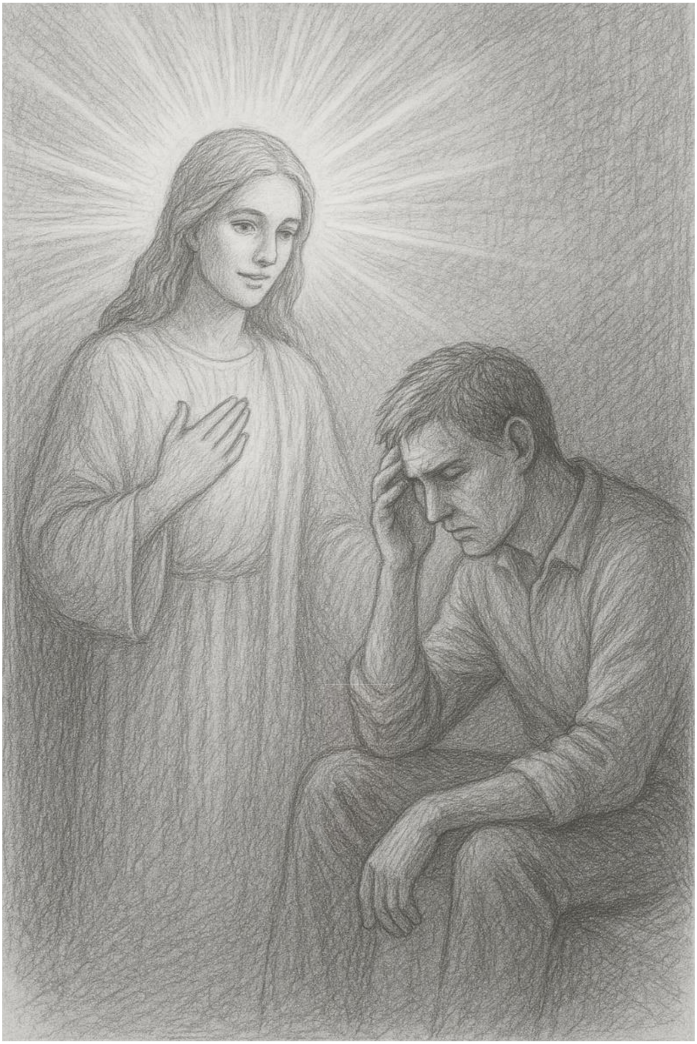

पालक

वो हमारी राहें बनाते रहे,
हम उन्हें ताकते चलते रहे |
वो हमें मुस्कान देते रहे,
और खुद मुस्कुराना भूल गए |
वो हमारी उलझन को सुलझाते रहे,
और खुद सुलझना भूल गए |
वो हमारी समझ को सुलगाते रहे,
और खुद सुलगना भूल गए |
वो हमारी सवंरन को निहारते रहे,
और खुद निखरना भूल गए |
वो हमारे कांटे बटोरते रहे,
और खुद को निकालना भूल गए |
वो हमें दर्पण दिखाते रहे,
और खुद को निहारना भूल गए |

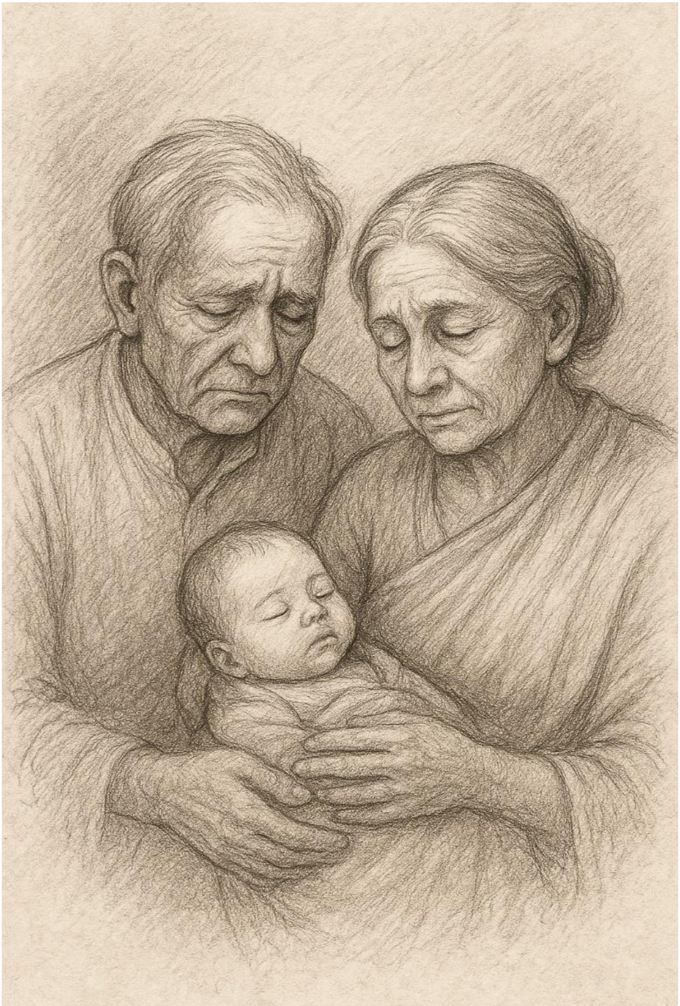

हुँकार

मैं तुझ तक आना चाहूं
पर कदम डगमगा रहे हैं|
मैं तुझ पर रुकना चाहूँ
पर जिंदगी धका रही है|
मैं तुझको पाना चाहूँ
पर रूह कंपकंपा रही है |
मैं तुझे कुछ कहना चाहूँ
पर शब्द सकपका रहे है |
मैं तुझे सपना बनाऊँ
पर मेरे सपने भी लहरा रहे हैं
आज यहाँ एक ठहराव चाहिए
बस तुम्हारी एक हुँकार चाहिए |
ये डगमगाते कदम ताल बनाएंगे
ये शब्द भी तुझ तक आएंगे
ये सपने भी खिलखिलायेंगे

बस तुम्हारी एक हुँकार चाहिए
बस तुम्हारी एक हुँकार चाहिए

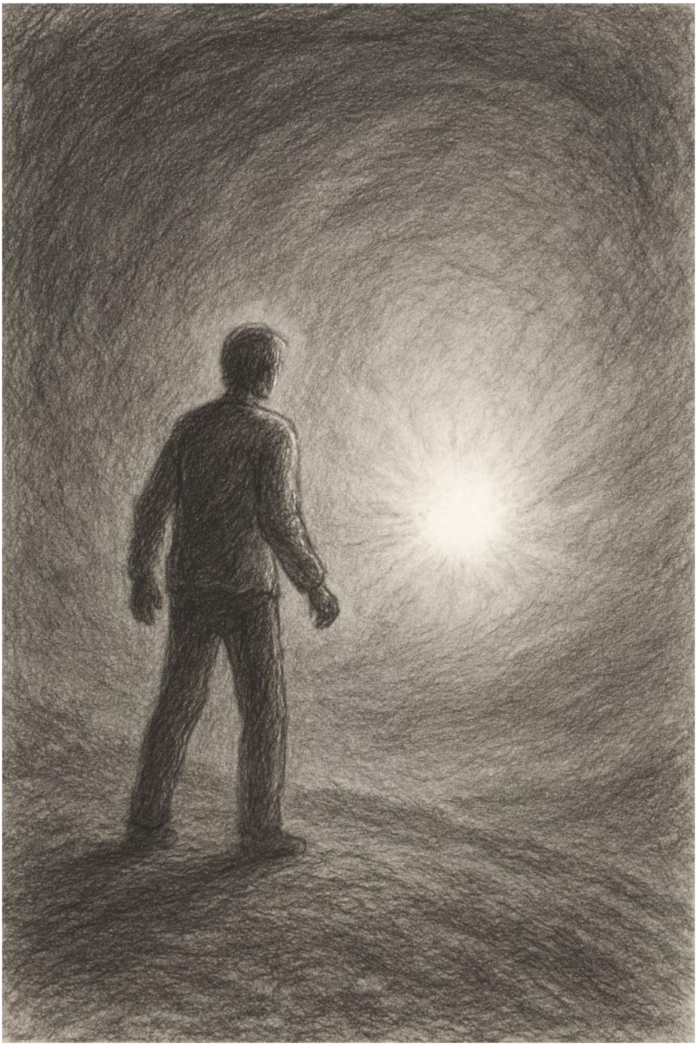

वक्त

वक्त गुजर रहा है,
सब सम्भल रहे हैं |
वक्त गुजर रहा है,
सब सँवर रहे है |
वक्त की जुबाँ में,
सब सिमट रहे है |
वक्त को आवाज दो,
सब निकल रहे है |
वक्त नहीं बंधा है
वक्त नहीं सजा है
उस से पूछकर देखो
जिसको वक्त नहीं मिला है |
वक्त के साये ने जिसको,
व्यथाओं से जकड़ा है,
उस से पूछ कर देखो
उसका वक्त कैसे कटा है |
वक्त की बुलंदी पर चढ़कर,
एक बार झाँक कर तो देखो

कि

क्या छूट गया था ?

क्या छूट गया है ?

वक्त की सीमाओं में

क्या टूट गया है |

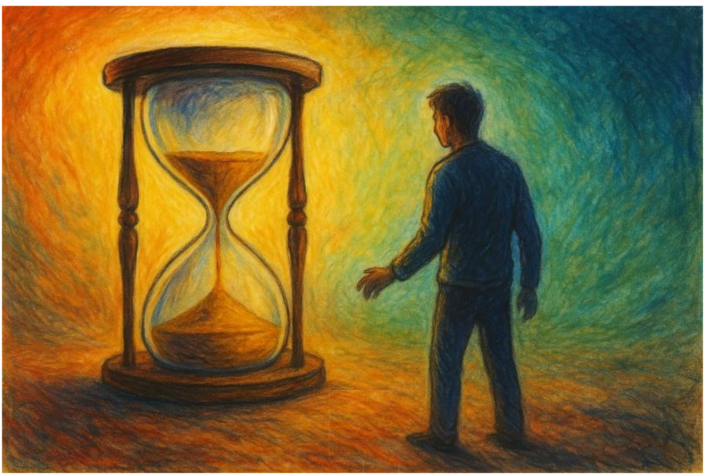

जंजीरें

जंजीर हर तरह की होती है|
एक से निकले तो दूसरी जकड़ लेती है |
जंजीरे ... वो तरंगे होती है
जिसे कोई और नहीं खुद ही पकड़ लेते हैं |
कोई प्यार की तो कोई नफरत की
कोई रिश्ते की तो कोई दिखावट की
कोई खुशामद की तो कोई शराफत की
कोई बदनामी की तो कोई खिलाफत की
कोई चतुराई की तो कोई सत्यार्थ की
कोई राग तो कोई आलाप की
कोई सपनों की तो कोई हकीकत की
जंजीरें न जाने कितनी तरह की होती है
जिसकी हर एक कड़ी जुड़ी होती है
कभी उलझन में तो कभी सुलझन में |

छाया एक वक्त की

एक वक्त के साथ तुम इधर आए
एक वक्त के साथ तुम उतर आए
उस वक्त के साथ हम सँवर आए
उस वक्त के साथ सपने बसर आए
उसे वक्त के साथ बहुत भंवर आए
उस वक्त के साथ हम निकल आए
उस वक्त के साथ तुम जहन में उतर आए
उस वक्त के साथ मेरे हर वहम में उतर आए
उस वक्त के साथ तुम भी बह आए
उस वक्त के साथ तुम भी कह आए
लेकिन वक्त के हर लहजों से
डर के अनंत झोकों से
तुम चुपचाप से आगे निकल गए
और वक्त के मुझसे जुड़े
हर वहम से निकल लिए
उस वक्त के साथ हम तो वही रहे
लेकिन तुम कटाक्षित मुस्कान के साथ देखते रहे
उस वक्त के साथ हम खुद को भूल गए
उस वक्त के साथ हम गिडगिड़ा भी खूब लिए

वह वक्त भी ऐसा कि
मजबूर कहकर, खुद को, वापिस ही न मुड़े
मैं रह गई दंग खुद को कोसते हुए
और देखते रह गई उस वक्त को
आगे बढ़ते हुए

अनकही

वो वीराना क्या
जो भीड़ में ना ठहर सके
वो सिहरन क्या,
जो छुअन से न थम सके
वो इशारे ही क्या,
जो बतिया न सके
वो बगिया ही क्या,
जो खिल न सके
वो सोच ही क्या,
जो खुद को न समझ सके
वो जौहरी ही क्या,
जो खनक न परख सके
वो हकीकत ही क्या,
जो बयां न कर सके
वो शिकायतें ही क्या,
जिनसे लड़ न सके
वो मानस ही क्या,
जिसमे गलतियाँ न हो

वो ख़ुशी ही क्या,

जो समझ ही न सके

वो इश्क़ ही क्या,

जो छुपा न सके |

मंथन

बैठे हो यूँ क्यूँ,
उस दुनियां में अभी
आँखों के समन्दर को,
छलका ना कभी
उस कारवाँ को समन्दर में,
छुपाना तो अभी
उन पलों को ख़ुशी में
लुभाना ना कभी
नयनों को मूँदकर
इस पल की दुनिया को
समाना तो कभी
इस पल की ख़ुशी को
महसूस कर
मुस्कुराना तो कभी
बैठे हो यूँ क्यूँ,
उस दुनिया में अभी

नेत्रों से परे

हम मूँदकर आंखें बैठ गए
पर समझ ना आए यह हम,
यहां कहां गए
क्योंकि
हम यह जो मूँदकर आँखे बैठ गए |
बादल गरजे, बिजली भी चमके
इस हलचल में पंछी भी सहमे
इस गरजन में बुँदे भी ठुमके
पर हम पर असर अब भी ना बरपे
क्योंकि
हम मूँदकर आँखे बैठ गए
पंछी भी चहके, सूरज भी चमके
इन किरणों के झुरमुट में
लहराती धारा भी दमके
पर मन का पुजारी अब भी ना सहमे
क्योंकि
हम मूँदकर आँखे बैठ गए |
शब्दों की सीमाएं मन के पर चले
खुद की करनी पर हम खुद ही जले

खुद गए अँधेरे में, अब सोचे
रौशनी हम में कोण भरे
क्योंकि
मूँदकर आँखे हम बैठ गए |
उस ज्ञान की अनुभूति से
उनकी धाराएं नीर बनकर आँखों से बहे
अब मन की रौशनी भी आँखों से कहे
चमक अपनी तू खुद से बरसा
इन पलकों की परतों को सामने से हटा

ख्याली चलन

मैं श्यामल, तू पंडित, तू बुद्धिमानी है
मेरी जी से, तेरी मति से, चलती हर कहानी है
मैं बदरंग, तू धनक, तू उसमें बिखरी हर लाली है
मेरी रंग से, तेरी धन से, चलती हर कहानी है
मैं भी चुप, तू भी चुप, तू एक खानदानी है
मेरी चुभन से, तेरी चयन से, चलती हर कहानी है
मैं नक्ष, तू नाम, तू एक मनमानी है
मेरी तुझसे, तेरी तुझसे, चलती हर कहानी है
मैं ख्याली, तू चलन, तू एक ख्याति है
मेरी कटन से, तेरी ढ़लन से, चलती हर कहानी है

एक दाना

तुझे चुगते हुए मेरा मन बदल गया
तेरी हालत देख मेरा दिल पिघल गया |
तेरी कहानी मुझे सुननी है
तेरी निगाहें मुझ बुननी है |
तो ..ये अन्जाम मेरा हो गया
मेरा मालिक मुझसे खो गया |
तो उसने किया सौदा मेरा,
महलों में मुझे छोड़ गया |
सर तक छिलकते पैसों से,
वो मुझको तोल गया|
फिर ....
एक लम्बी हुंकार मुझसे आई |
फिर बारी आई उसकी जिसने मेरा मोल किया |
भंडारों में रखकर
मुझे सड़ने के लिए छोड़ दिया |
मैं काम उसके आना था
मेहनत करके भी
जिसके पास ना एक दाना था |
पर ...

जड़ दिया हमें इन दीवारों में

देश के इन जमींदारों ने |

और एक दिन ..

छलक आई उसकी आँखे

उलझ गयी उसकी बातें |

एक दिन क्या ?

फेंक दिया मुझे इन कंटालो में

और आज मै इस हालत में पड़ा हूँ

आपके काम आने में भागी बना हूँ

ठोकरों का ठहाका हम समझ ना सके
संघर्ष का विधाता हम पर बरप ना सके
जब बात आई खुदगर्जी पर ...
उस दरख्त से हम उलझ ना सके

ठोकर के ठहाकों की गूँज
आज भी दीदार करती है
संघर्ष के कदमो की गूँज
आज भी नयनों से सवाल करती है
बहती हुई हवा की गूंज
आज भी झुटमुट सा बवाल करती है

यह अकाट्य आघात
उपेक्षित कर रहा है
जीवन के हर प्रान्त को
प्रक्षेपित कर रहा है
यह जितनी उम्मीद
बदलाव की कर रहा है
जीवन में उतना ही गूढ़
ठहराव भर रहा है

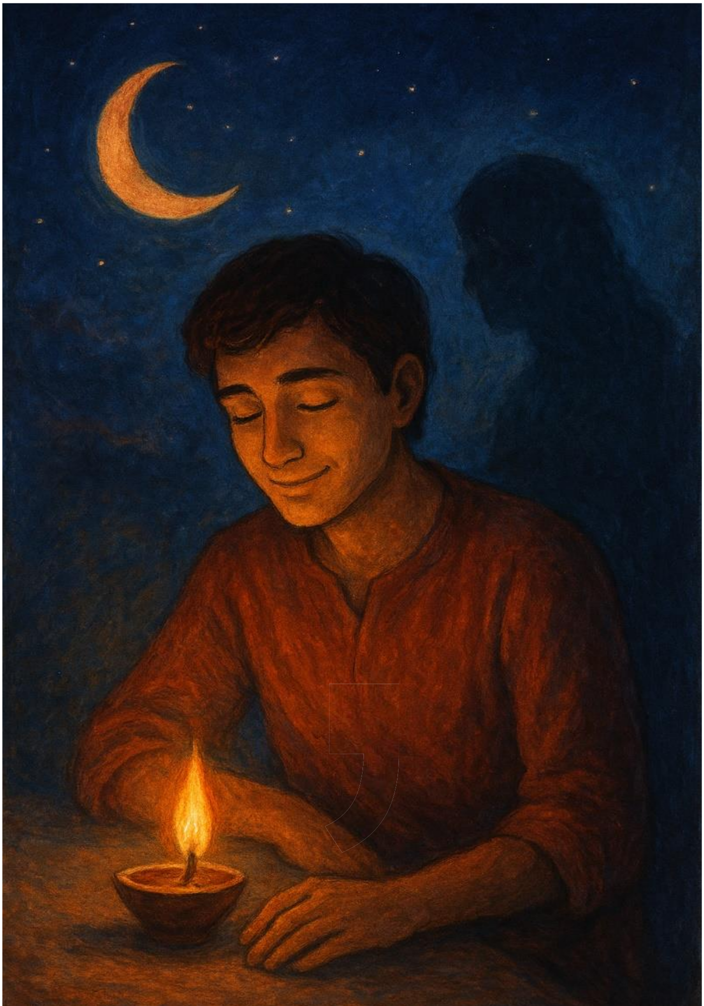

अन्जानी परछाइयाँ

अन्जान से बैठे हो इस हवा में,
अन्जानी -सी बात पे मुस्करा रहे हो |
अन्जाना -सा चेहरा है सामने,
अन्जानी -सी छवि पे इतरा रहे हो |
अन्जान हो तुम उस छाया से,
अन्जानी -सी उस परछाई से बहला रहे हो |
अन्जान हो उस आने वाले भँवरे से,
अन्जाने से दीये से जगमगा रहे हो |

बूंदों की दस्तक

आँखे मूंद कर बैठे थे
सहसा एक बूंद गिरी
बिजली सी दौड़ गई और आंखें खुली
फिर तो लगा कि बरसात ही हो गई
बस...
वही खड़ी खुशी से झूम गई
इस सहसा बारिश को देखकर लगा
कि ....
कोई नई दुल्हन रास्ता भूल गई

मदमस्त होकर चल रहे थे
कि आज तो कुछ पाया है
फिर पलके उठी तो सामने देखा
कि कोई आया है
बातें हुई और फिर अपना रास्ता पाया है
फिर खामोशी से अकेली ही
चाय का आनंद उठाया है
सामने बैठे नाचीज ने हमें देख कर
और साथी को कहकर
कहक़हा लगाया है
और साथियों को दिखाकर
उनका भी हंसाया है
यह देखकर हमें गुस्सा बहुत आया है
फिर ना रुके तो

सब्र भी उफान पर आया है

पास जाकर कहा हमने

ऐसा क्या इन्हें बतलाया है ?

अब हँसी बंद हुई उनकी

और एक ने कहा

आप कभी सहपाठी थे

और आज फिर से यही पाया है

इसमें कौन सा राज बताया है

जो देख कर कहकहा लगाया है?

अब घबराए हुए वो ताक रहे एक-दूसरे को

फिर एक ने क्षमा मांग कर पीछा छुड़ाया है

हमने भी हवा की तरह

वहां से खुद को खिसकाया है |

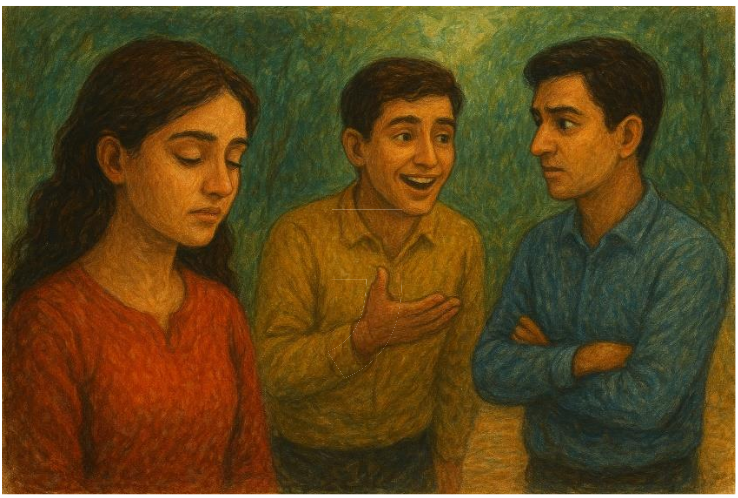

जागती किताबें, सोती आँखें

रात की तन्हाई है

यह मदहोशी क्यों छाई है

आलम ऐसा है कि

मुझे नींद बहुत ही आई है

किताब खुली है और आंखें उसमें गड़ाई है

लेकिन सब कुछ चार पैसे और एक पाई है

आंखें बंद करो तो

बीम, कोलम और वही एक पाई है

आंखें खोलने पर

वहीं इनकी ढिठाई है

अब और क्या कहूं

आगे कुँआ और पीछे एक खाई है

अब और लिखा नहीं जा रहा

मुझे नींद बहुत ही आई है |

पहचान की तलाश

रास्ते करीब है,
पहचान क्यूँ नहीं पा रहे हैं ?
धुंधला गया है सब कुछ,
हटा क्यूँ नहीं पा रहे हैं ?
अँधेरा छा गया है हर कंही,
इन अँधेरो के बंधनों को
छुड़ा क्यूँ नहीं पा रहे ?
कुछ बुँदे भी चली इन आँखों से,
इनको रास्ता दिखा क्यूँ नहीं पा रहे ?